हिन्दी दिवस को समर्पित

शत् शत् नमन भारत के पूर्व प्रधानमंत्री एवं भारत रतन स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी जी को श्रद्धांजली

उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, पटियाला

(संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार)

के सौजन्य से

नटराज आर्ट्स थियेटर (रजि.) पटियाला

द्वारा

Indian Institute of Architects & Patiala Architects Association

Sub Centre Patiala

Building Solutions

(construction & interior under one roof)

कला कृति, पटियाला (रजि.) की प्रस्तुति

ये जिन्दगी

(चित्रा मुद्गल के हिन्दी उपन्यास गिलिगडु पर आधारित)

नाट्यलेख, परिकल्पना एवं निर्देशन–परमिन्दर पाल कौर

शुक्रवार, 14 सितंबर, 2018

सायं 6:00 बजे

कालीदास सभागार, विरसा विहार केन्द्र,
नजदीक भाषा भवन, शेरा वाला गेट पटियाला

बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्रेष्ठ कलाकार महिन्द्र सिंह जग्गी का विशेष सम्मान

कृपया आप सादर आमंत्रित है।

Ar.L.R. Gupta
Chairman IIA Sub Center Patiala
President Patiala Architects Association

Ar. R.S. Sandhu
Ar. P.S. Walia
Ar. Indu Arora
Ar. Lokesh Gupta

Gopal Sharma
Programme Director
Mob. 73553-61080

Avtar Singh Arora
President
Kala Kritti, Patiala

Special Thanks : Ashu Garg

पात्र परिचय

मंच पर

जसवंत सिंह
कर्नल स्वामी
नरिन्दर
बबीता
दूबे
बनवारी
नरेटर (सूत्र धार)
पड़ोसन
श्रीमती श्रीवास्तव
लड़की
रवी भूषण
सुरजीत एबसर्ड
इंजी.एम.एम स्याल
मीनाक्षी वर्मा
गोपाल शर्मा
विक्की चौहान
चंदन बलौच
रूप कौर संधू
परमिन्दर पाल कौर
सिम्मी

मंच परे

प्रस्तुति प्रभारी — गोपाल शर्मा
संगीत — हरजीत गुड्डू
प्रकाश संयोजन — हरमीत भुल्लर
मंच डिंजाइन/ वस्त्र विन्यास — परमिन्दर पाल कौर
रूप सज्जा — चंदन बलौच
मंच व्यवस्था — निर्मल सिंह, राकेश बब्बर
मंच संचालन — गिरीश चंद्र शर्मा
प्रैस प्रभारी व प्रचार — गोपाल शर्मा,

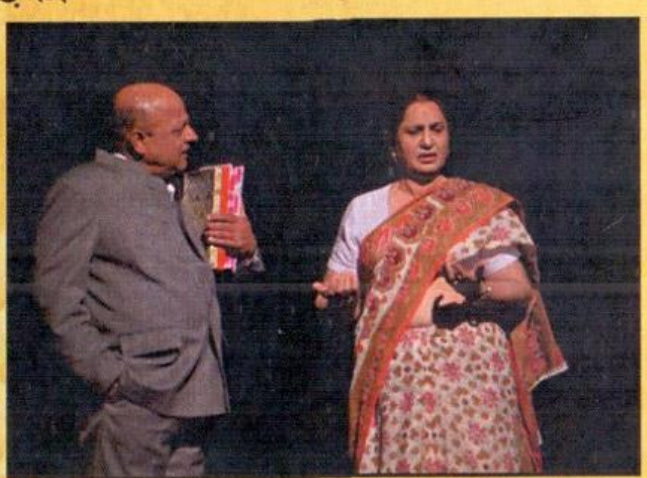

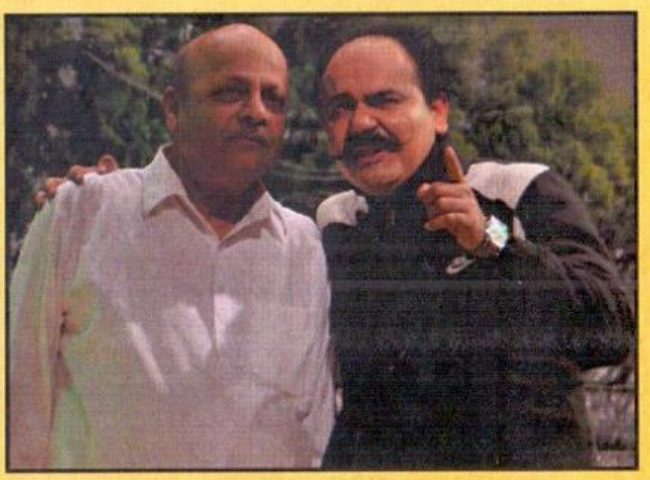

'यह जिन्दगी' सेवानिवृत्त बुजुर्ग की एकरेखीय कहानी ही नहीं बल्कि जीवन के रंग बहुआयामी प्रयोगों में उभर के आए है, जो दो सेवानिवृत्त अधिकारियों के जीवन में तेरह दिनों पर ध्यान केंद्रित करता है। जिसमें दो बुजुर्गों के जीवन का पूरा खाका ही नहीं बताता अपितु आज के बदलते जीवन मूल्यों को भी परिभाषित करता है कि कैसे नौजवान पीढ़ी अपने बुजुर्गों को घर में सम्मान न देते हुए अकेला छोड़ देती है, जिन्हें अपने बच्चों की उदासीनता, और कूरता के कारण दुखी जीवन जीने के लिए मजबूर होना पड़ता है।

मैं दुनिया की सभी भाषाओं की इज्जत करता हूँ,
परंतु मेरे देश में हिंदी की इज्ज़त न हो, यह मैं हरगिज़ नहीं सह सकता।
—आचार्य विनोबा भावे